ISSN : 2583-2948

अमित कुमार मल्ल

मोब 9319204423

गोल्डन भूरे रंग की चाय

मिट्टी के कुल्हड़ में

गोल्डन भूरे रंग की चाय

से

उड़ती भाप

और उसमें भविष्य ढूंढती

निर्विकार

निर्वेद

खोई सी

आँखें।

तेरे जाने आशंका में

तेरी यादों

तेरी खुशबू

तेरी बातों में उलझा मन

अभी भी

मेज के उस ओर

बेंच पर

बैठे तुम्हे

ढूंढ रहा है

तुम

अपने घर से

परिवार से

ISSN : 2583-2948

रिश्तेदारों से

लड़ती भिड़ती

इस शहर की गलियों में

प्याज आलू की तरह रहकर

बर्षो कॉम्पिटिशन की तैयारी

करते

परीक्षा देते

परिणाम का इंतजार करते करते

मेरे कुछ बनने की बाट जोहते जोहते

थक कर

नौकरी और प्यार को

भूलते हुए

घर जाने के लिये

अपने रूम के लिये

निकल गयी हो

मुझसे

बिना आंख मिलाए

बिना हाथ मिलाए

मैं

नौकरी , तुम्हे , अपने को

अपनी जिंदगी को

पकड़ रहा हूँ

उस कुल्हड़ की

गोल्डन चाय से

उड़ती भाप में।

anukarsh@alliance.edu.in